International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 568-571

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 568-571
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2017
Accepted: 23-12-2017

प्रशांत कुमार
बिजुली, सदर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रशांत कुमार
बिजुली, सदर, दरभंगा, बिहार, भारत

महाकवि कालिदास और मेघदूत

प्रशांत कुमार

सारांश
महाकवि कालिदास वैदिक साहित्य में वर्णित–''त्वमस्माकं तवस्मसि'' अर्थात् हे प्रभो ! आप हमारे हैं और हम आपके हैं'' से परिचित हैं, और अनिर्वचनीयं प्रेम–स्वरूपम्' के पक्षधर। वे वैष्णव परम्परा प्रोक्त प्रेम के इन दो स्वरूपों में अपनी आस्था प्रकट करते दिखते हैं– निगुर्ण, निराकार, निर्विकार एवं निखिल, ऐश्वर्य, माधुर्य, आनन्द, एवं सौन्दर्य आदि अनन्त सद्गुण प्रेम। यह प्रेम जीवन का रमणीय रहस्य है और काव्य–सौन्दर्य का अलौकिक आधार भी। जितने भी महाकवि अथ च रचनाकार हुए हैं उनकी काव्यतन्त्रियों में प्रेम एवं सौन्दर्य की ध्वनी निहित है। कालिदास की काव्य, सरस्वती प्रेम की मूलवर्तिनी वृत्रियों एवं क्षुधाओं को जगाती हुयी उनके नियामक मयादाओं में बांध देती है। उनके काव्य में प्रेम का सूक्ष्म एवं स्थूल स्वरूप प्रकट हुआ है। कालिदास प्रेमगीत के गायक हैं। वे नयनाभिराम रूप की मादक छवियों की भावना से जैसे वे एकदम चमत्कृत हो जाते हैं, वैसे ही प्रणय रस को अत्यन्त मन्द, अत्यन्त मादक तथा अतिशय गंभीर स्रोतस्विनी प्रवाहित करके वे सहृदय भावुकों को सर्वथा आत्म विभोर कर देते हैं।

प्रस्तावना
कालिदास ने अपनी रचनाओं में काम को सृष्टि का मूल प्रेरक शक्ति के रूप में महत्त्व दिया है लेकिन वही जीवन का चरम लक्ष्य नहीं। उनकी नायक नायिकाएं काम की माया से अभिभूत होती हुई दीख पड़ती हैं लेकिन संयम की कठोरता पर भी उनकी लेखनी खूब चली है। प्रेम या काम को धर्म के आदर्श स्वरूप को समाप्त करने की छूट उन्होंने नहीं दी है। इसलिए अगर उन्होंने कण्व के पावन आश्रम में शकुन्तला एवं दुष्यन्त के प्रेमोद्गार का अवसर दिया है तो दूसरी तरफ दुर्वासा के शाप की योजना कर दोनों को एक–दूसरे के विरह में तड़पने को बाध्य भी किया है।
मानव के अन्तःकरण में प्रणय दीप के प्रज्ज्वलित हो जाने पर कैसी ललित एवं अति कोमल किरणें उससे प्रस्फुटित होकर प्रकाश बिखेरती है इस प्रेमानन्द का अतिविश्वासोत्पादक चित्रण मेघदूत में हुआ है। प्रणय की वेगात्मक दशा को कृत्रिम साधनों के सहारे रोक दिया गया है। विवशतावश जो प्रणय शरीरतः लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाता, वह मानस रूप से वहां पहुंचना चाहता है और उसी क्रम में मेघदूत प्रादूभूर्त होता है। यक्ष अपनी प्रियतमा को 'जीवितं में द्वितीयम्'' अर्थात् अपना दूसरा प्राण कहता है।
कालिदास का प्रेमानुभव जितना गहन–गंभीर एवं प्रामाणिक है, उतना ही आकर्षण एवं मौलिक भी। कवि का मानना है कि जब स्त्री में प्रेम का उदय होता है, तब उसकी प्रथम प्रक्रिया वाणी नहीं, वरन् शरीर के अंग–प्रत्यंगों एवं हाव–भावों द्वारा प्रकट होती है–स्त्रीणामाद्यं प्रणय वचनं विभ्रामो हि प्रियेषु। [1] प्रेम की संकोचमयही अभिव्यक्ति शाकुन्तल में भी रमणीय है। दुष्यन्त के दर्शन से आश्रम–पालिता शकुन्तला के हृदय में जो प्रथम विक्रिया उत्पन्न हुई है, उसकी अभिव्यक्ति का वर्णन कवि ने स्वयं दुष्यन्त के मुख से ही कराया है। दुष्यन्त कहता है कि यद्यपि शकुन्तला अपनी वाणी को मेरी वाणी से नहीं मिलाती। तथापि, जब मैं बोलने लगता हूं तब वह कान देकर बड़े ध्यान से मेरी बातें सुनती है। यद्यपि कि वह मेरी ओर मुख करके नहीं बैठती, तथापि उसकी आंखें आंखे मेरी ही ओर लगी रहती हैं–

वाचं न मिश्रयति यद्यपि मद्वचोभिः कर्णे ददात्यवहिता मयि भाषामाणे।
कामं न तिष्ठति मदाननसम्मुखीयं भूयिष्ठमन्यविषया न तु दुष्टिरस्याः। [2]

मेघदूत का कवि एक श्रेष्ठ मनौवैज्ञानिक का परिचय देता है। उसके पास चेतना एवं अनुभूति का भंडार है। इसलिए वह सर्वश्रेष्ठ कवि है। प्रेम के महान् गायक है। मनोविज्ञान के अनुसार किसी व्यक्ति के मानस पटल पर अथवा अन्तःकरण में जो भाव समाहित हैं, वे भाव किसी–न–किसी रूप में उसके व्यवहार में, उसकी रचनाओं में उसके कार्यकलाप में सर्वत्र दृष्टिगत होता है। कालिदास एक विशिष्ट प्रेमी कवि हृदय प्रत्येक काव्य में रोता हुआ, विलखता हुआ,

तो कभी मिलन की दशा में आनन्द से झूमता हुआ, खिलखिलाता हुआ दीख पड़ता है। मेघदूत का नायक ऐसी ही स्थिति का पात्र है। महाकवि ने यक्ष के बहाने मनुष्य के व्याकुल भावों को प्राणवन्त किया है घूम–ज्योति–सलिल एवं मरूत के समवेत रूप मेघ को दूत बनाकर।

न केवल मेघदूत में ही अपितु अपनी तीनों नाट्य रचनाओं में भी कालिदास ने मानव हृदय की विभिन्न दशाओं में उदीयमान वृत्तियों का चित्रण सांसारिक व्यवहार के साथ पूर्ण सामज्जस्य स्थापित करते हैं। नाटक में प्रेममूलक आख्यानों को ही कथावस्तु के रूप में महाकवि ने परिगृहीत किया है। मालविकाग्निमित्र में प्रतिकूल परिथितियों में रह कर भी राजसी अन्तःपुर में पैदा होने वाले यौवन सुलभ प्रेम का चित्र है, तो विक्रमोर्वशीय में यौवन की उपाम वासना से उत्पन्न, अति विषयी पुरूष को अपनी प्रेमिका के विरह में पागल बना देने वाले प्रगाढ़ प्रेम का निरूपण किया गया है। लेकिन शाकुन्तलत् में इन दोनों से भिन्न तपस्या एवं साधना के सहारे वियोग की ज्वाला से विशुद्ध बनने वाले काम को प्रेम में परिणति के अति सुन्दर चित्र को प्रस्तुत किया गया है।

मेघदूत एक प्रसिद्ध गीतिकाव्य है। गीतिकाव्यों का आधार तत्त्व प्रेम होता है। इसका मुख्य विषय मानव–जीवन के एक ही पक्ष का विशेष रूप से वर्णन होता है। गीतिकाव्यों में प्रेम से पूर्ण उद्‌गार की अभिव्यक्ति आवश्यक होता है। गीति तत्त्व गेयता से बनता है। इस तरह गीति आत्मा का भावातिरेक है। संवेदनशील भावनाओं का चमत्कृत प्रकाशन ही गीतिकाव्य की आत्मा है, जिसमें मानवीय प्रेम मूलक हर्षोल्लास एवं अश्रुरोदन की अभिव्यक्ति का आवेश रहता है। वेदना के तार जब झनझनाते हैं तब गीत फूटता है। और इस गीत में प्रेमतत्त्व का प्राधान्य होता है। इसमें कवि अपने अन्तःकरण में स्थित प्रेम के कोमल भावों में से किसी एक को केन्द्र में रखकर कल्पना शक्ति के सहारे उसे गेय बनाते हुए संक्षेप में प्रकट करता है। ऐसी रचना कवि अपने से नहीं कर पाता, वरन् स्वतः स्फूर्त होकर रचना प्रस्तुत हो जाती है। प्रेम रस में डूबे हुए कवि का हृदय सुख दुःख की भावना से उद्वेलित होकर सहसा काव्य के रूप में प्रस्फुटित हो उठता है। इसमें भावातिरेक, कल्पना एवं संगीत तत्त्व होते है। इस काव्य के दो वर्ग होते हैं–प्रथम शृंगार मूलक द्वितीय भक्तिमूलक। स्पष्ट है कि मेघदूत शृंगारमूलक गीतिकाव्य हैं।

मेघदूत में मार्मिक विरह–व्यथा से युक्त एक विरही यथ की विरह–जनित करूण कथा का सारगार्भित चित्रण है। प्रणय सन्देश की ऐसी पावनता–समन्वित सन्देश का अन्य किसी भी काव्य में नहीं। वास्तव में गीतिकाव्य के मूल स्वरूप के कारण मेघदूत प्रेम–व्यथा से व्यथित कालिदास की एक सच्ची आत्मकथा है। मेघदूत के सूक्ष्म अध्ययनोपरान्त लगता है कि महाकवि द्वारा कुमारसंभव में शिव–पार्वती के राति–सुख वर्णन द्वारा दी गई शाप जनित प्रेम–दुःख की सच्ची कथा है, जिसमें महाकवि ने किसी यक्ष का रूप जोड़कर अपने हृदय के सच्चे प्रेमिल भावों को मेघदूत के प्रथम श्लोक में ही अतिकारूणिक ढंग से व्यक्त कद दिया है–

कश्चित् कान्ता.....रामागिर्याश्रमेषु।

प्रेम की ज्वाला में जलते हुए कवि की यह काव्यकृति, मानव के अन्तःकरण को द्रवीभूत कर देने वाली विरही यक्ष की वेदना भरी कहानी ये युक्त यह खण्ड काव्य संस्कृत साहित्य में ही नहीं अपितु विश्वसाहित्य में प्रेम–काव्य के रूप में अपना अनुपम स्थान रखता है। किसी अचेतन वस्तु का प्रेम–प्रसंग में दौत्य कर्म के लिए भेजना एवं प्रेम में गाढ़ उत्कंठातिरेक की सद्यः अभिव्यक्ति करना वास्तव में एक प्रतिभा सम्पन्न कवि की मौलिक कल्पना है। इस काव्य का यक्ष जब यक्षिणी के पास अपने प्रीतियुक्त संदेशों को भेजना चाहता है और अनुकूल पवन को मन्द–मन्द् गति से गमन करते हुए निर्मल नभ में बगुलियों को अलकापुरी की ओर गमन करते हुए देखता है तो सहसा कल्पना की धारा में माधुर्ययुक्त पद विन्यास स्वतः स्फुटित हो उठते हैं।

मन्दं–मन्दं नुदति पवनश्चानुकुलो.....खे भवन्तं बलाकाः। [3]

मेघदूत प्रेम भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

इसमें प्रेम बाण से घायल दुःखी यक्ष के हृदय के सच्चे भाव उद्‌भासित हुए हैं। पात्र विशेष अर्थात् यक्ष को आगे करके, उसे मुख्य पात्र बना कर कुबेर शाप घटना विशेष से जोड़कर अन्तःकरण के प्रेमोद्‌गार व्यक्त किया गया है। जिसका प्रधान सहायक है मन्दाक्रान्ता छन्द। गीतिकाव्य में विरह–वेदना की व्यथा–कथा समाहित रहती है। विरह–वेदना से विगलित आंसुओं का हार ही उपहार में प्राप्त होता है। यक्ष के माध्यम से पत्नी–विरही कालिदास की अन्तर्ज्वाला से परिपक्व प्राणों का स्वर गुंजन स्वरूप है। कालिदास के अन्तःकरण का प्रेमी यक्ष के माध्यम से अपनी व्यथा प्रस्तुत करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। महाकवि का अन्तर्दहन शान्त रहते भी तीव्र है। प्रस्तुत गीत में उनका शान्त किन्तु मर्मबेधक अन्तर्जलन द्रष्टव्य है–

तां जानीथः परिमित कथां जीवितं में द्वितीयम्
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।। [4]

मेघदूत में प्रेम की मार्मिक अभिव्यंजना हुई है। यक्ष की विवशता, दीनता एवं स्मृति के विषाद् की जड़ता का अनन्य रूप में वर्णन यहां है–

त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलायाम्
आत्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामिकर्तुम्।
अस्रैस्तावन्मुहुरूपचितैः दृष्टिरालुप्यते में।
क्रूरस्तास्मिन्नपि न सहते संगमं नौ कृतान्तः।। [5]

संगीत, ललितकलाओं एवं प्रेम की विमल भावनाओं की आत्मा तथा वेदना जनित आत्मा का सरस भोजन होता है। संगीत का वास्तविक लक्ष्य रसानुभूति है। यदि संगीत कला में सरस–साहित्य का संगम हो जाय तो मणिकांचन संयोग बन जाता है। इस दृष्टि से यदि परखा जाय तो मेघदूत में संगीत का योगदान उसकी प्रेमाभिव्यक्ति में निखर उठा है। संगीत का संबंध वाद्य–नृत्य और कंठ से अधिक होता है। तीनों के मेल से संगीत में चमत्कार एवं आकर्षण बढ़ता है। महाकवि इसी परम्परा में संगीत को सीखा है और प्रकृति में होने वाले संगीत के स्पन्दन का अनुभव किया है। कालिदास ने यक्ष के माध्यम से प्रेम–भावना को संगीत द्वारा प्रस्तुत करने में सफलता पायी है। मेघदूत का कवि कहता है कि जिस हिमालय में बांसों के छिद्रों में हवा भरने से मधुर शब्द हो रहा है, किन्नरियां समवेत स्वर में त्रिपुर विजय के गीत गा रही हैं, वहीं यदि हे मेघ गुफाओं में प्रतिध्वनित तुम्हारी गर्जना हृदय की ध्वनि का काम कर दे तो शिव–ताण्डव के लिए सारे संगीत का सजा एकत्रित हो जायेगा–

शब्दायन्ते मधुरमलिनैः कीचकाः पूर्णमाणः इत्यादि [5]

संगीत प्रेरणा, चेतना, हृदय के सच्चे भावों की अभिव्यक्ति एवं प्रेम–विरही की व्यथा को व्यक्त करने का उत्तम साधन होता है। यक्षिणी स्वयं संगीतज्ञा है। तभी तो यक्ष मेघ से कहता है कि हाथों में वीणा को लेकर संगीत के माध्यम से अपने वियोग के दिनों को भुलाने का प्रयत्न करने वाली मलिन वसना, मेरी प्रेयसी को देखोगे जो अपनी गोद में वीणा को रखकर मेरे नाम से चिन्हित गीतों के पद्यों को गाना चाहती हुई, आंसुओं के भींगे तारों को किसी प्रकार ठीक करके भी बार–बार अपने सधे हुए स्वरों में उतार–चढ़ाव को भूलती हुई तुम्हें दीख पड़ेगी–

उत्संगे वा मलिनवसने सौम्य! निक्षीप्य वीणां
मदगोत्रांकः विराचितपदं गेयमुदगातुकामा।
तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथांचिद्
भूयो भूयः स्वयमपिकृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ति। [7]

मेघदूत में चित्रकला के माध्यम से भी प्रेमाभिव्यक्ति हुयी है। कला की उत्पत्ति प्रेम, भक्ति एवं श्रद्धा से हुयी है। सरकार की उपासना एवं आराधना प्रेमानन्द एवं परमानन्द की प्राप्ति कराती है। प्रेमी ने प्रेमास्पद की, भक्त ने भगवान की प्राप्ति हेतु उनके स्वरूप को साकार बनाकर अर्चन–वन्दन एवं पूजन करके मिलन सुख को, आनन्द को प्राप्त करने का सफल प्रयास किया है। चित्र से ही प्रेमी अपने प्रेमास्पद के स्वरूप को निहार कर अपने प्रेम की पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करता है। मेघदूत का यक्ष चित्र के सहारे ही अपनी पत्नी से संभाषण, समागम एवं सान्निध्य से प्रेमानुभूति का अनुभव करना चाहता है। यक्ष कहता है कि हे प्रिये! जब मैं मरू आदि धातुओं के रंगों से पत्थर पर तुम्हारी उस अवस्था का चित्र बनाता हूं, जिसमें तुम प्रेम से कुपित रहती हो और मैं अपने को तुम्हारे चरणों पर गिरा हुआ बनाता हूं जिसमें तुम प्रेम से कुपित रहती हो और मैं अपने को तुम्हारे चरणों पर गिरा हुआ बनाता हूं तो सहसा मेरी दृष्टि बार–बार झरते हुए आंसुओं से ढक जाती है। लगता है वह निष्ठुर, निर्मम, दारूण दैव उस चित्र में भी हम दोनों के मिलन को सह नहीं सकता। [8]
मेघदूत को प्रेमकाव्य भी माना गया है। प्रेम को उद्दीप्त करने में वर्षा का अनन्य स्थान होता है। वियोगिनी के लिए यह विष समान होता है। यही कारण है कि आषाढ़ के आगमन पर नभो–मण्डल में जब यक्ष देखता है तो उसका पत्नी–विरह जाग उठता है। यक्ष ही क्यों? प्रेम की धधकती ज्वाला में जलकर तुलसी के राम ने भी कह डाला है। –

हे खगमृग हे मधुकर श्रेणी।

तुम देखी सीता मृगनयनी।। और जायसी की नायिका ने हे भौंरा! हे काग! से संदेश पूछा था, उसी प्रेम की ज्वाला में जलकर यक्ष ने मेघ को दूत बनाकर अलकापुरी में सन्देश लाने के लिए मेघ के समक्ष अपने आंसुओं को रोकते हुए भी अपने प्रेम–विरह को व्यक्त किए बिना नहीं रहता–

मेघोलोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथा वृत्तिचेतः।
कष्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।। [9]

कामशक्ति के प्रमुख प्रतीक इन्द एवं मेघ को माना गया है। कालिदास का कामार्त्त यक्ष ने इसीलिए मेघ के इन्द्र रूप, प्रकृति–पुरूष रूप कथा काम रूप का स्मरण कर अपनी पेम कातर अवस्था में उसे ही प्रणय–संवाद का वाहक बना दिया है–

जातं वशे भुवनविदिते पुष्करावर्त्तकानाम्
जानामि त्वां प्रकृति पुरूषं कामरूपं मघोनः।

ऋतुसंहार का शरद् वर्णन प्रेम के स्वरूपक सम्यक् विश्लेषण करता है तो वर्षा का स्वागत उसमें राजा के रूप में हुआ है। कालिदास वर्षा का स्वागत करते हुए अपनी प्रिया से कहते हैं कि देखी प्यारी! जल–सीकरों से भरे हुए बादलों के मतवाली हाथी पर चढ़ा, हुआ, चमकती हुयी बिजली की पताकाओं को फहराता हुआ तथा मेघों की गर्जन का नगाड़ा बजाता हुआ कमियों का प्यारा यह पावस राजा के समान सज धजकर आ पहुंचा है–

ससीकराम्भोधर मत्तकुज्जरस्तडित् पताकोऽशनि शब्दमर्दनः।
समागतो राजवदुद्धतद्युतिः धनागमः कामिजनप्रियः प्रिये।।

मेघदूत में प्रियतमा के प्रति एक विरह–विधुर नायक का प्रेम पूर्णरूपेण प्रदर्शित होता दीख पड़ता है। यक्ष का प्रणय–संदेश किसी परकीया प्रेयसी के प्रति नहीं होकर स्वकीया पावन प्रेयसी को प्रेषित किया गया है। यक्ष को ऐसा विश्वास है कि उसका भव्य भवन उसके अभाव में शोभाहीन एवं उसकी प्रियतमा, जो कि छरहरे, बदनवाली, नवयौवना, छोटे–छोटे दांतों वाली, पके बिम्बफल के समान अधरों वाली, क्षीण कटिवाली, चकित हरिणी की लोल चितवन वाली, गहरी नाभि से युक्त नितम्ब के भार से अलसाई गति वाली, स्तनों के भार से झुकी हुई है, उसके शोक में कृशकाय हो गयी होगी–

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकित हरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभालादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्यु वति विषये सृष्टिराद्येव धातुः।। [10]

प्रेमियों की विरह कातरता की अति मनोरम दशा का वर्णन करते हुए यक्ष कहता है कि हे प्रिय स्वप्न दर्शन के मध्य भी जब तू मुझे मिलती हो तब निष्ठुरतापूर्वक तुझको भुजा–पाशा में बांधना चाहता हूं तो वह भी संभव नहीं हो पाता–

मामाकाशप्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेष हेतोः
लब्धायास्ते कथमपिमया स्वप्नसंदर्शनेषु।
पश्यन्तीनां न खुल बहुशो न स्थलीदेवतानाम्
मुक्ता स्थूलास्तरू किसलयेष्ष्वश्रुलेशाः पतन्ति।। [11]

मेघदूत में नारी–प्रेम का परिचय अति उदात्त एवं विशुद्ध रूप में प्राप्त होता है। प्रेमिका की रूप–सुधा के पान से प्रेमी का मन कभी भी तृप्त नहीं होता। वहां पवित्र प्रेम भावना एवं प्रणय की पावनता है। यद्यपि इसमें शृंगार का पुट है तथापि उसमें उदात्त नैतिकता भी अपने आदर्श रूप में सन्निहित है। विरह की ज्वाला में जलने वाला यक्ष अपनी जिस प्रियतमा के पास प्रणय–संदेश भेज रहा है, वह उसकी विवाहिता पत्नी है। उसकी पत्नी पतिव्रता है, उसमें सच्ची पतिभक्ति वर्त्तमान है। जिस तरह रामायण की पति भक्ता सीता अपने प्राणवल्लभ से मिलन की आशा में ही अशोक वाटिका में विरह–विधुरा बन कर बैठी है, ठीक उसी तरह यक्ष पत्नी भी शाप की समाप्ति के पश्चात् पति से मिलन होगा, इसी आशा में बैठी है। वस्तुतः यक्ष और उसकी पत्नी का प्रणय मानवीय प्रेम का ही आदर्श प्रतिरूप है और दाम्पत्य प्रेम की एकनिष्ठता का उज्जवल उदाहरण है।
कालिदास का यक्ष शाम पूर्व प्रमादी एवं विलासी, उपाम भोग लिप्सा एवं वासना से अभिभूत है। जिनके कारण अलौकिक धरातल अलका से गिरकर निम्न पार्थिव स्तर रामगिरि पर रहने लगा है। किन्तु लम्बे वियोग ने यक्ष की विलासी भावना एवं कुत्सित वासना को भस्मसात् कर पुनः उसे पावन प्रणय में परिवर्तित कर दिया है। वस्तुतः प्रेम की पराकाष्ठा की पुष्टि वियोग से ही होती है। वियोग की लम्बी अवधि दम्पत्ति के सच्चे प्रेम की कसौटी होती है–''न बिना विप्रलम्भेन संयोगः पुष्टिमश्नुते''। मेघदूत काव्य का तो उद्देश्य ही है प्रेम की प्रधानता स्थापित करना। जहां मानव प्रेम में साहचर्य प्रदान करने हेतु मेघ को प्रणय–दूत बनाया गया है। मानव एवं प्रकृति का अद्वितीय ढंग से अद्वैत सम्बन्ध इस प्रेम काव्य में स्थापित किया गया है। कामरूप मेघ एवं कामुक यक्ष ने मिलकर सम्पूर्ण संसार को काम के पीयूष–प्रवाह में निमज्जित कर दिया है। वस्तुतः काम चैतन्य की वृत्ति है और प्रेम उसका प्रकाश है और इस प्रकाश का स्वभाव है राशीभूत होना एवं चित्त को द्रवित करना।
मेघदूत में जहां कामार्त्त यक्ष की वियोग–व्यथा का कारूणिक चित्रों की भरमार है, वह कालिदास की अन्य रचनाओं में वर्णित प्रेम से इस दृष्टि से भिन्न है कि पार्वती, उर्वशी, धारणी,

सुदक्षिणा, इन्दुमती, शकुन्तला आदि सुन्दरियों के प्रारंभिक वर्णनों में जहां कामवासना की रमणीय हिलोरें है, वह धीरे–धीरे शान्त होती हैं और कालान्तर में प्रेम सरोवर में वात्सल्य का कमल खिल उठता है। रूप की सुरा, शील की सुधा में परिणत हो जाती है वहीं सामान्य अध्येताओं की दृष्टि में शृंगारिक प्रतीत होने वाली मेघदूत की यक्षिणी साधकों को भोग के साथ–साथ योग का भी सन्देश दे जाती है। वास्तव में मेघदूत भोग और योग दोनों पक्षों का समन्वय स्थापित करने वाले अद्वितीय अनुपम रचना है। हां, यदि मेघदूत में पाठकों को केवल शृंगार का आस्वादन हो तो वह निन्दनीय नहीं। क्योंकि शृंगार सृष्टि के विकास का स्रोत है। संसार के विहित भोगों का उपयोग निन्द्य नहीं हो सकता। वस्तुतः भोग प्रेय है, पर श्रेय का रास्ता प्रेय के दरवाजे से ही होकर निकलता है। धर्म रहित प्रेय ग्राह्य नहीं अपितु ज्यादा है। कालिदास के मेघदूत में कलात्मक सौन्दर्य दीखता है। जहां मनुष्य की व्यक्तिगत कल्पना एवं भावना जब किसी माध्यम से अभिव्यक्त हो सौन्दर्य का रूप धारण करती है तो वह कलात्मक सौन्दर्य कहलाता है। महाकवि कालिदास का सौन्दर्य–विधान प्रणय की वेदना से सिक्त एवं विरह की व्यथा से व्यथित रहा है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि महाकवि कालिदास जिनके काल के पिषय में एवं जन्म–स्थान के विषय में ईसा पूर्व द्वितीय शती से लेकर छठी सदी काल के विषय में एवं जन्म–स्थान के विषय में ईसा पूर्व द्वितीय शती से लेकर छठी सदी का काल महत्वपूर्ण हो और उज्जयिनी अथवा मिथिला क्षेत्र बहुचर्चित हो, उन्होंने सात प्रमुख ग्रन्थों की रचना की है। ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और एक नाट्य ग्रंथ अभिज्ञानशाकुन्तलम् इन समस्त ग्रन्थों में धर्म, अर्थ–काम एवं मोक्ष नामक पुरूषार्थ का परिपोषण हुआ है। इनकी दृष्टि जीवन में विराट् की अनुभूति को उत्पन्न करती है। यह अनुभूति परम आनन्द देने वाली है। अतएव यह सौन्दर्य की अनुभूति है। सौन्दर्य की इस अनुभूति से हमारा साधारण अनुभव रूपान्तरित हो जाता है और प्रत्येक वस्तु में दिव्यता और आध्यात्मिक का आविर्भाव होता है। भारतीय सौन्दर्य चेतना में यह आध्यात्मिक दृष्टि कालिदास की रचनाओं में पग–पग पर दृष्टिगोचर हुआ है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत प्रबंध में प्रेम की दिव्यता एवं काव्य–सर्जन में प्रेम का योगदान, कालिदास की प्रेम भावना, शृंगार के प्रेमपूर्ण मनोभाव, उसका साहित्यिक–आध्यात्मिक–दार्शनिक–शास्त्रीय अर्थ च धार्मिक आधार का विवेचन यथासाध्य किया गया है। प्रेम नित्य, निरंजन अनुपम, अव्यक्त पावन है जो पवित्र परमात्मा का साक्षात् स्वरूप है। वह परमात्मस्वरूप आनन्दमय एवं रसरूप है जो हृदय का अतिविलक्षण भाव है। जब प्रेम परिपक्व हो जाता है, तब प्रेमी की प्रेमास्पद के अतिरिक्त अन्य किसी का स्मरण नहीं रहता। उसका प्रेमास्पद व्यापक हो जाता है। वह घट–घट में दिखाई देने लगता है।

सौन्दर्य, सहकार, प्रकृति–प्रेम, समरसता, अखण्डता, शिव–दृष्टि, लोकमंगल, अद्वैत दृष्टि कालिदास के काव्य–ग्रन्थों के चरम रहस्य हैं। कालिदास की अखण्ड दृष्टि और लोकमंगल भावना भारत ही नहीं, विश्व के कल्याणर्थ भी स्वीकार्य हैं।

कालिदासकृत मेघदूत अन्यतम प्रेम–प्रधान काव्य है। जहां प्रेम की मार्मिक व्यंजनाएं प्राप्त होती हैं। फलतः इसके विषय में यह कहना युक्तियुक्त है कि 'यह न खण्डकाव्य है, न करूण गीतिकाव्य ही, वरन वह प्रेम विषय प्रधान भावात्मक गीतिकाव्य है।

संदर्भ

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–1/33
2. मेघदूतम्–पूर्व–9
3. मेघदूत–उत्तर–20
4. वहीं–42
5. मेघदूत–पूर्व–56
6. वही–उत्तरमेघ–42
7. पूर्वमेघ
8. उत्तरमेघ–19
9. वहीं–43
10. वहीं–46
11. वहीं–49